अनुक्रमणिका ॥

विवाह में ॥

नंबर.	चाल.	प्रथम पद वा टेक.
१	झाजू	प्रथमहि सुमति जिनेश्वर ध्याऊं.
२	,,	प्रेम प्रमोद रहस जिनवर की.
११	हांहां वे कि हंहंवे	चार घातिया कर्म नासके.
१२	,,	जुआं मांस मद चोरी वेस्या.
१३	,,	अष्ट करम की फौजें आई.
१४	,,	अब की वेलां अवसर पाया.
१५	बोले मोरे भाई	सुरग लोक में जुगी अथाई.
१६	छोड़ मोरे भाई	सात व्यसन की लगी अथाई.
१७	,,	सुमति कुमति की लगी लड़ाई.
१८	साजाना	मोंको अति सुन्दर मिजमानी.
१९	हमारे नामाना	पांच वचन ये मानियो.
२०	,,	ऐसी कुमति कहां पाइयां.
२१	हमारे रामाना	ऐसे चेतन संग भूलियां.
२२	हमारे रामाना	सुघर चेतन बहु पलियां को.
२३	मैने हटकीथी	जबजे कर्म उदय हो आये.
२४	सुनत हो	काल अनन्त निगोद गमाया.

२५	सुनत हौ	सुमति सुनारी अरज करत है.
२६	,,	मोह नीद तोहि देत असाता.
२७	,,	पंच उदम्बर तीन मकार.
२८	नौबद पै डंका	दोय घड़ी जब रात गई है.
२९	रहम दिला	मात गर्भ मे हुए जब वासी.
३०	बनरा	मोरौ शिवपुर जावनहारौ बनरा.
३१	,,	ऐसौ सुन्दर बनरा वौतौ.
३२	,,	व्याहु की जा अति उत्तम चाल.
३३	,,	मै न अकेलौ जांउं सुमति बिन.
३४	,,	हियरे से लगालेती बनरे.
३५	,,	बनाके संग चलौगीरे.
३६	,,	मोरौ सब भैयन सिरदार.
३७	,,	व्याहन मुकति पुर धाये.
१०७	,,	लाला कर हथियनकौ मोल.
१०८	,,	तुम्हें बुलाय गईरे बन्ना.
*	उपसहार	कविता
३८	फाग	वे तौ चेतन खेलत फाग
३९	भौरारे	भ्रमत २ बहुकाल गमायौ.
४०	,,	ऐसी उत्तम कुलकूं पायौ.
४१	,,	तूने सार गमायौ.
४२	,,	परत्रिय सेवन कहा फल होय.

४८	जात करम कोपनियां	सुघर चेतन बहु पनियां को निकरी.
४९	,,	ऐसे चेतनराय पनिया को निसरे.
५०	सुनोजू	लाख चौरासी योनिमें भटकौ.
५१	,,	कानासे आये कहां तुम जैहौ.
५८	मोरे लाल	धन २ होवे रजमत वेटी.
५९	,,	सजना हो मेरी शील चुनरिया.
६०	वाजें नेवरा घने	आज अनन्द वधाये तो वाजें.
६१	,,	चेतन राय कुमति निकारियौ.
६२	टांडौ लाधें जोवन जरवा	पूरव लाधे पश्चिम लाधे.
६४	रसिया	ऐसे नेमीश्वर रसिया.
६५	,,	जा नरदेही तुमने पायलई.
१०१	घोरी (सुनौजू)	झूनागढ से तेजन आई.
१०२	,, (जू)	नेमीश्वर को व्याहु वखानों.

वन्दना तथा मुंडन के समय ॥

२	हांजू	श्रीभगवन्त भजौ अतिशय युत.
४	,,	प्रथम २ जिन पूजन कौ फल.
६	,,	ऐसे जनम नये धर २ के.
४३	भौरारे	पात्र अपात्र कुपात्र जु भेव.
४४	,,	चारों दान भली विधि देहु.
४५	,,	जिन दर्शन तें कह फल होय.
४६	,,	पंच परम सुमिरें सुख होय.

४७	,,	तूं तौ नरक निगोदमें वहुदिन.
८०	गीत	इक अरज सुनौ महाराज.
८२	,,	भज लै श्री जिनवर जी की वानी.
८९	,,	हरप उर धारकें श्री सम्मेद.

भोजन के समय ॥

५	हांजू	आदि नाथ जिन भोजन कारण.
५३	प्रभुजी	देवन देव स्वामी जिन अपने.
५४	गीत	श्रीगुरु आये मोर पाहुने.
५५	मोरेलाल	आगे २ राम चलत है.

जन्मोत्सव के समय ॥

७	वधाई	काई घर२ मंगलाचार जन्मन प्रगटाये.
८	,,	कांई घर २ मंगलाचार सन्मति जन्मेजी.
९	वुन्देला	समेला कानाहो जइया रावजू.
१०६	,,	जिनेश्वर त्रिशलाकेहो.
१०	वधाई	ऊंचौ सौ नगर सुहावनौ.
१००	गीत	लिया आज प्रभूजी ने जन्म.
१०३	सौहरौ	प्रणामों आदि जिनेश.
१०४	,,	पूरी भई है रैन.
१०५	,,	सव देवीं छप्पन कुमारी.

हरसमय गाने के ॥

५२	हमारे आतमा	अव के नर तन पाइयौ मोरे आतमा.

५६	हां मोरे लाल	चौबीसों जिन मज्जन आये.
५७	मोरे लाल	कहना से आये तुम यारे ऐना.
६३	हां कि नारे	खोटे काम करो मतिभाई.
६७	दादरा	नेम बिन नहीं रहो दिनरैन.
६८	,,	सिद्धन कों शीश नमाऊं.
६९	,,	नरभव रतन गमाया.
७०	,,	निशि भोजन दुखदाई.
७१	,,	श्री वामाजू के प्यारे.
७२	,,	धरम धन जोडियो मोरी गुय्या.
७३	,,	जगत सब झूठोंगे मोरी गुइयां
७४	,,	जातन लगी मोरे जाने.
७५	,,	मोरा तो मन मोरा मासी.
७६	,,	मत बरजो मोरी माई हमकों.
७७	,,	अरी तुम कौन हो प्यारी.
७८	,,	सुनिये प्राणि सकल सुखकरा.
७९	,,	सुन लो बात हमारी.
८३	गीत	मैं तो सों पूछों शील महुटा.
८४	,,	इक तपकौ बंगला छुआओ.
८७	,,	मैं तो कैसी करूं कहां जाऊं.
८८	,,	बनज नहीं व्यापार नहीं.
९४	,,	अब जलाय देहारी सपाय देहारी.

९५	,,	वातौ मडरही दिन अरु रात.
९६	,,	ये हो को रहौ हरिया लैनिकरौ.
९७	,,	रथ ठाडौ करो भगवान.
९८	,,	कैसी करौं कहां जाऊं मोरी गुइया.
९९	,,	तुम सुनियो हो दीन दयाल.

शास्त्र सभा के समय ॥

८१	,,	अब के हो भजलो भगवान.
८५	,,	सुनलो अब श्रावक तनौ व्रत.
८६	,,	अपनौ रूप निहारियौ.
९०	,,	देव धरम गुरुको भजौ हो.
९१	,,	चेतन अब निज कारज जानौ.
९२	,,	भले भज नामारे पंच परमेष्ठी देवा.
९३	,,	चेतन अपनी सुरत सम्हारौ.

श्रावण ॥

६६	श्रावण	बालपनै प्रभु घर रहौ.